

शरबती गेहूँ: मध्य प्रदेश कृषि की विशिष्ट पहचान और पोषण का उत्कृष्ट स्रोत



डॉ. नम्रता द्विवेदी^{1*},
डॉ. देवेंद्र कुमार पायसी²,
डॉ. सुषमा तिवारी³,
डॉ. मोहम्मद यासीन²,
डॉ. दिनकर⁴,
विपिन माथनकर¹ और
सचिन उड्के¹

¹आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, राजमाता विजयराजे सिधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर- 474002 (म.प्र.)

²आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, कृषि महाविद्यालय, सीहोर, राजमाता विजयराजे सिधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर- 474002 (म.प्र.)

³पादप आणविक जीव विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी विभाग, राजमाता विजयराजे सिधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर- 474002 (म.प्र.)

⁴पादप प्रजनन एवं आनुवंशिकी विभाग, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

*अनुरूपी लेखक
डॉ. नम्रता द्विवेदी*

मध्य प्रदेश को देश का “गेहूँ कटोरा” कहा जाता है, जहाँ कृषि राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानी जाती है। राज्य की विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियों में अनेक फसलें उगाई जाती हैं, जिनमें गेहूँ (ट्रिटिकम एस्टिवम एल) रबी मौसम की सबसे प्रमुख फसल है। मध्य प्रदेश में उत्पादित गेहूँ की अनेक किसों में शरबती गेहूँ अपनी विशिष्ट गुणवत्ता, स्वाद, पोषण और उपभोक्ता पसंद के कारण विशेष पहचान रखता है। यह न केवल उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है, बल्कि प्रदेश के किसानों की आय वृद्धि में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।



शरबती गेहूँ का परिचय

शरबती गेहूँ एक उच्च गुणवत्ता वाला नरम दाने वाला गेहूँ है, जिसकी पहचान इसके चमकदार, मोटे एवं हल्के सुनहरे रंग के दानों से होती है। इसके दानों में प्राकृतिक मिठास पाई जाती है, जिसके कारण इसे “शरबती” नाम दिया गया। इससे प्राप्त आटा अत्यंत मुलायम होता है तथा इससे बनी रोटियाँ अधिक नरम, स्वादिष्ट

और लंबे समय तक ताज़ा रहती हैं। यही गुण शरबती गेहूँ को मध्य प्रदेश की विशिष्ट पहचान बनाते हैं।

शरबती गेहूँ का इतिहास एवं उत्पत्ति (मध्य प्रदेश के संदर्भ में)

शरबती गेहूँ का ऐतिहासिक एवं भौगोलिक संबंध मध्य प्रदेश से अत्यंत गहरा है। मालवा, निमाड़, चंबल और बुंदेलखण्ड अंचल की जलवायु तथा काली कपास मिट्टी ने

शरबती गेहूँ की गुणवत्ता को विशेष रूप से निखारा है। इन्हीं क्षेत्रों में लंबे समय से शरबती गेहूँ का उत्पादन होता आ रहा है, जिसके कारण आज मध्य प्रदेश को शरबती गेहूँ का प्रमुख उत्पादक राज्य माना जाता है।

जलवायु एवं मृदा की भूमिका

मध्य प्रदेश की ठंडी एवं शुष्क शीतकालीन जलवायु शरबती गेहूँ की खेती के लिए अत्यंत अनुकूल

मानी जाती है। 20-25°C तापमान फसल की वृद्धि के लिए उपयुक्त होता है, जबकि दाना भरने की अवस्था में हल्की ठंड इसके दानों की चमक, मिठास और गुणवत्ता को बढ़ा देती है। प्रदेश की काली मिट्टी (रेगर मिट्टी) में जल धारण क्षमता अधिक होती है, जिससे दानों का विकास बेहतर होता है और शरबती गेहूँ की प्रीमियम गुणवत्ता सुनिश्चित होती है।

प्रमुख शरबती गेहूँ किस्में

मध्य प्रदेश की जलवायु एवं मृदा परिस्थितियाँ शरबती गेहूँ उत्पादन के लिए अत्यंत अनुकूल हैं। शरबती गेहूँ की गुणवत्ता एवं उत्पादकता में सुधार के उद्देश्य से भारतीय कृषि अनुसंधान प्रणाली के अंतर्गत विभिन्न राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थानों तथा राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा विकसित एवं मध्य प्रदेश के लिए अनुशंसित कई उन्नत किस्में वर्तमान में प्रचलन में हैं। मध्य प्रदेश के विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों में सफलतापूर्वक अपनाई गई प्रमुख शरबती गेहूँ किस्मों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

1. C-306 (सुजाता)

यह एक पारंपरिक एवं प्रसिद्ध शरबती गेहूँ किस्म है, जो अपने उल्कष्ट स्वाद, सुनहरे दानों एवं अधिक प्रोटीन के लिए जानी जाती है। मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में यह लंबे समय से लोकप्रिय रही है।

2. JWS-17

यह किस्म जवाहर गेहूँ अनुसंधान केंद्र, जबलपुर द्वारा विकसित जवाहर श्रृंखला की है। मुलायम दाने एवं उत्तम रोटी गुणवत्ता के कारण इसे मध्य प्रदेश में शरबती

गेहूँ के रूप में व्यापक रूप से अपनाया गया है, साथ ही यह सीमित सिंचाई में भी अच्छा प्रदर्शन करती है।

3. HW-2004 (अमर)

यह मध्य प्रदेश की परिस्थितियों के अनुकूल उच्च उत्पादन क्षमता वाली किस्म है। इसके दाने आकर्षक एवं चमकदार होते हैं तथा आटा गुणवत्ता अच्छी होने के कारण यह किसानों एवं उपभोक्ताओं दोनों में लोकप्रिय है।

4. HI-1500 (अमृता)

यह किस्म विशेष रूप से मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र के लिए उपयुक्त है। इसमें अच्छी उपज के साथ-साथ बेहतर बेकिंग एवं रोटी गुण पाए जाते हैं।

5. HI-1531 (हर्षिता)

यह एक नवीन एवं उन्नत शरबती गेहूँ किस्म है, जो मध्य प्रदेश की गर्म परिस्थितियों में भी संतोषजनक प्रदर्शन करती है। इसमें उल्कष्ट दाना गुणवत्ता, अधिक प्रोटीन एवं अच्छा स्वाद पाया जाता है।

6. HI-1605 (पूसा उजाला)

पूसा उजाला गेहूँ की एक उन्नत किस्म है, जिसे मध्य प्रदेश की कृषि-जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल विकसित किया गया है। इस किस्म के दाने मुलायम, चमकदार होते हैं तथा इनमें उल्कष्ट रोटी गुणवत्ता पाई जाती है। अपने शरबती गुणों के कारण यह

किस्म मध्य प्रदेश के किसानों में लोकप्रिय है और विभिन्न परिस्थितियों में स्थिर एवं संतोषजनक उपज देने की क्षमता रखती है।

7. HI-1655 (पूसा हर्षा)

पूसा हर्षा एक उन्नत गेहूँ किस्म है, जिसमें उत्तम दाना गुणवत्ता एवं

बेहतर स्वाद पाया जाता है। यह किस्म मालवा क्षेत्र की कृषि-जलवायु परिस्थितियों में अच्छा प्रदर्शन करती है तथा अपने शरबती गुणों के कारण उपभोक्ताओं में अत्यधिक लोकप्रिय है। इस किस्म में प्रोटीन के साथ-साथ जिंक एवं लौह जैसे महत्वपूर्ण सूक्ष्म पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जिसके कारण यह गुणवत्तायुक्त एवं पोषण-समृद्ध आहार हेतु अत्यंत उपयोगी है।

8. HI-1544

यह किस्म मध्य प्रदेश के लिए उपयुक्त मानी जाती है। इसके दाने सुनहरे रंग के, मुलायम एवं पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। इसमें उपज और गुणवत्ता का अच्छा संतुलन पाया जाता है, जिससे यह शरबती गेहूँ के रूप में पहचानी जाती है।

9. JW-3020

यह किस्म जवाहर कृषि विश्वविद्यालय (जेएनकेवीवी), जबलपुर द्वारा विकसित की गई है। यह मध्य प्रदेश की जलवायु के लिए अनुकूल है तथा इसमें अच्छी दाना गुणवत्ता, शरबती गुण एवं स्थिर उत्पादन क्षमता पाई जाती है।

10. JW-3173

यह किस्म जवाहर कृषि विश्वविद्यालय (जेएनकेवीवी), जबलपुर द्वारा विकसित की गई है तथा मध्य प्रदेश की जलवायु के लिए विशेष रूप से उपयुक्त मानी जाती है। इसमें शरबती गुण, अच्छे दाने एवं अनुकूलन क्षमता पाई जाती है।



पोषण मूल्य

मध्य प्रदेश में उत्पादित शरबती गेहूँ पोषण तत्वों से भरपूर होता है। इसमें प्रमुख रूप से:

- कार्बोहाइड्रेट – ऊर्जा का मुख्य स्रोत
- प्रोटीन – शरीर की वृद्धि और मरम्मत हेतु आवश्यक
- आहार फाइबर – पाचन क्रिया को सुचारू रखने में सहायक
- विटामिन बी समूह – तंत्रिका तंत्र एवं चयापचय के लिए आवश्यक
- खनिज तत्व – जैसे आयरन, मैग्नीशियम और जिंक

इसका नियमित सेवन शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है, पाचन तंत्र को मजबूत करता है और जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों के खतरे को कम करता है।

शरबती गेहूँ और स्वास्थ्य लाभ

शरबती गेहूँ से बने खाद्य पदार्थ न केवल स्वादिष्ट होते हैं, बल्कि

स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होते हैं। इसकी रोटियाँ हल्की, सुपाच्य और लंबे समय तक नरम रहती हैं। मध्य प्रदेश के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में इसे स्वास्थ्यवर्धक आहार के रूप में प्राथमिकता दी जाती है। मध्यम मात्रा में सेवन करने से यह मधुमेह, मोटापा और हृदय रोग जैसी समस्याओं को नियंत्रित करने में सहायक हो सकता है। इसके फाइबर युक्त गुण पाचन तंत्र को स्वस्थ बनाए रखते हैं।

मध्य प्रदेश में खेती की विधि

शरबती गेहूँ की खेती हेतु प्रदेश में भूमि की गहरी जुताई कर खेत को समतल किया जाता है। बुराई का उपयुक्त समय नवंबर के प्रथम पखवाड़े से मध्य नवंबर तक माना जाता है। संतुलित उर्वरक प्रबंधन, समय पर सिंचाई एवं खरपतवार नियंत्रण से शरबती गेहूँ की उपज

और गुणवत्ता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

उत्पादन, उत्पादकता एवं आर्थिक महत्व

मध्य प्रदेश में शरबती गेहूँ की औसत उपज सामान्य गेहूँ के समान होती है, किंतु बाजार में इसके दाम अधिक मिलने के कारण किसानों को अतिरिक्त आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। शहरी क्षेत्रों में इसकी निरंतर बढ़ती मांग ने इसे प्रदेश के किसानों के लिए उच्च मूल्य वाली नकदी फसल का स्वरूप प्रदान किया है।

शरबती गेहूँ और खाद्य प्रसंस्करण

मध्य प्रदेश में शरबती गेहूँ से आटा, सूजी, दलिया एवं अन्य मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार किए जाते हैं। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में इसकी बढ़ती मांग से स्थानीय स्तर

पर रोजगार के नए अवसर सृजित हो रहे हैं।

भविष्य की संभावनाएँ (मध्य प्रदेश के संदर्भ में)

स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता और गुणवत्तापूर्ण खाद्यान्न की मांग को देखते हुए मध्य प्रदेश में शरबती गेहूँ का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है। नवीन किस्मों के

विकास, जलवायु सहनशीलता और आधुनिक कृषि तकनीकों के प्रयोग से इसकी उत्पादकता और गुणवत्ता को और बेहतर बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शरबती गेहूँ मध्य प्रदेश कृषि की

अमूल्य धरोहर है। यह स्वाद, पोषण, गुणवत्ता और आर्थिक लाभ का उत्कृष्ट समन्वय प्रस्तुत करता है। शरबती गेहूँ न केवल प्रदेश के उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य की रक्षा करता है, बल्कि किसानों की आय बढ़ाकर मध्य प्रदेश की कृषि को टिकाऊ एवं समृद्ध बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।